ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; 7(2): 201-205
www.allresearchjournal.com
Received: 22-11-2020
Accepted: 02-01-2021

अमर नाथ
प्लॉट नं 95, लमही, मुंशी प्रेमचन्द रोड, शिवपुर, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
अमर नाथ
प्लॉट नं 95, लमही, मुंशी प्रेमचन्द रोड, शिवपुर, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत

प्रकृति एक विवेचन

अमर नाथ

सारांश

"स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणं आतुरस्य विकार प्रशमनं च"

(च० सू० 30/26)

स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा अर्थात् स्वास्थ्य को बनाये रखना तथा रोगी के रोग का प्रशमन करना आयुर्वेद ज्ञान का प्रयोजन है। इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रकृति सम्बन्धित सम्यक् ज्ञान का बड़ा महत्त्व है।

प्रकृति शब्द प्र + कृति दो शब्द से बना है।
यहाँ प्र से तात्पर्य - प्रकट होने से है।
कृति से तात्पर्य - सृष्टि या संरचना से है।

जैसा कि शब्दकल्पद्रुम तथा ब्रह्म वैवर्त पुराण में कहा है -

प्रकृष्ट वाचकः प्रश्च कृतिश्च सृष्टि वाचकः।
(शब्दकल्पद्रुम तृतीय भाग पृ० स० 242)

शब्द व्युत्पत्ति के आधार पर भी देखा जाय तो कहा है -

"प्रकरोति इति प्रकृति:"
(सुश्रुत शारीर- घाणेकर टीका अ० 1)
अर्थात् जो प्रकट करता हो उसे प्रकृति कहते हैं।
शारीरिक प्रकृतियाँ (देह प्रकृतियाँ):

शारीरिक प्रकृतियाँ त्रिदोष (वात, पित्त, कफ) के प्रबलता के अनुसार होती हैं, वहीं मानसिक प्रकृतियाँ (सत्व, रज, तम) के आधार पर होती है।
आयुर्वेदीय संहिताओं में वर्णित उद्वरण से यह स्पष्ट एवं निश्चित है कि प्रकृति निर्माण शुक्र शोणित संयोग के समय दोषों के प्रबलता (उत्कटता) के आधार पर होती है। जिसके आधार पर सात प्रकार की प्रकृतियाँ बताई गयी है।

दो दोषों की प्रधानता से - तीन (वातपित्तज वातकफज, पित्तकफज) तीन दोषों की सम्यक् अवस्था से एक (वातपित्तकफज) प्रकृति को मौलिक स्वभाव कहा गया है, जो समवाय सम्बन्ध से रहते हुए अपरिवर्तनीय होती है।

प्रकोपो वाऽन्यथाभावो क्षयो वा नोपजायते।
प्रकृतिनां स्वभावेन जायते तु गतायुषः।।
(सु० शा० 4/77)

स्वभाव से ही प्रकृति का कोप या अन्यथा भाव (प्रकृति के दोष के कारण रोगोत्पत्ति) या प्रकृति का ह्रास नहीं होता है अर्थात् स्वाभाविक प्रकृति में आजन्म कोई परिवर्तन नहीं होता है। प्रकृति में इस प्रकार के परिवर्तन आयु समाप्ति के सूचक है।

प्रकृतिः जन्मत्रभृति वृद्धो पातादिः।
(च० सू0 17/62 पर-चक्रपाणि)

आधुनिक विज्ञान में भी शारीरिक एवं मानसिक प्रकृतियों का वर्गीकरण Phenotype तथा Genotype के रूप में किया जाता है। एक अमेरिकी वैज्ञानिक शेल्डन ने शारीरिक प्रकृतियों पर कार्य किया है, जो आयुर्वेदीय प्रकृति ज्ञान का अनुवाद लगता है। गर्भज विकास में जननस्तर बनने के समय जननस्तर विशेष की प्रबलता के आधार पर देहप्रकृति -

1) Endomorph - Endoderm Layer की प्रधानता से

2) Ectomorph - Ectoderm Layer की प्रधानता से

3) Mesomorph - Mescderm Layer की प्रधानता से

उपरोक्त यह तीन प्रकार के बताये हैं, इतना ही नहीं दो जननस्तर की संयुक्त प्रबलता से पुन तीन प्रकार तथा तीनों स्तरों की समप्रबलता से एक प्रकार, इस प्रकार सात प्रकार की देह प्रकृतियों का वर्णन किया है। आयुर्वेदीय प्रकृति ज्ञान तथा शारीरिक भार एवं ऊँचाई पर एक समन्वयात्मक अध्ययन- उपरोक्त के परिपेक्ष में समीचीन प्रतीत होता।

[The structure of Psychology (An introductory test educated by C.L. Howarth & K.L.E.C. Willham) Willian sheldon (1940-1942)]

कूट शब्दः स्वस्थस्य स्वास्थ्य, प्रकृति शब्द, रोगी के रोग

प्रस्तावना -

प्रकृति शब्द का तात्पर्य,
'प्रकरोति इति प्रकृतिः'।
"प्र + कृ कर्तारि तिक्त भवादौ तिक्तवा"

प्रकृति शब्द का अर्थ स्वभाव से लिया गया है।

प्रकृतिर्गुण साम्ये स्यामात्यादि स्वभावयोः।
योनौ लिङ्गे. पौरवर्गेऽमी पक्षत्यादयः स्त्रियाम् ।।

(मेदिनी कोशे- तान्तवर्ग:-अध्याय -16 श्लोक नं0 132)

"प्रकृतिरारोग्यम्।
(च०सू०-चक्रपाणि-9)

बाहमण पुराण एवं सर्वदर्शन संग्रह के अनुसार प्रकृति शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है।

प्र+कृति

प्र का तात्पर्य प्रकृष्ट है, यही आयुर्वेद में वर्णित मूल प्रकृति है। कृति शब्द का तात्पर्य सृष्टि से है। यथा - प्रकृष्ट वाचकः प्रश्च, कृतिश्च सृष्टि वाचकः
(शब्दकल्पद्रुम तृतीय भाग पृष्ठ सं० - 242)

वैदिक संहिताओं, ब्राह्मण ग्रन्थों, शब्दकल्पद्रुम तथा उपनिषद् आदि में प्रकृति शब्द का तात्पर्य शरीर उत्पत्ति, शरीर स्वभाव तथा राजतंत्र आदि से हैं।

विभिन्न ग्रन्थों में प्रकृति के अनेक पर्याय वर्णित हैं। जैसे:- स्वभाव, योनि, लिंग, स्वामी, अमात्य दुर्ग और सप्तधातु आदि नाम से वर्णित है।

सामान्य रूप से यदि देखा जाय तो प्रकृति का तात्पर्य व्यक्ति के स्वभाव से है। आयुर्वेद में प्रकृति को स्वभाव के रूप में परिभाषित किया जाये तो यह जीवों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं अध्यात्मिक पहलुओं को समाहित करता है।

साहित्य समीक्षा (Review of Literature) - Main Thrust

प्रकृति निर्माण के लिए, विभिन्न ग्रन्थों के अध्ययन करने से यही तथ्य उभरकर सामने आता है कि शुक्र-शोणित संयोग के समय जिस दोष की उत्कटता या प्रधानता रहती है, उसी के अनुरूप प्रकृति का निर्माण होता है।

यथा:

शुक्रशोणित संयोगे यो भवैद्दोष उत्कटः।

प्रकृतिर्जायतें तेन तस्या में लक्षणं श्रृणु ।।

(सु० शा० 4/62)

आयुर्वेदीय संहिता ग्रन्थों में वात, पित्त और कफ को त्रिदोष कहा गया है और यह स्पष्ट किया गया है कि यही वात, पित्त, कफ अपने प्राकृतावस्था में शरीर को धारण करते हैं। पिता के शुक्राणु और माता के शोणित (डिम्ब) में जो दोष प्रबल होते हैं उन्हीं के अनुसार गर्भ की देह प्रकृति (शारीरिक एवं मानसिक) बनती है और यह प्रकृति आजन्म बनी रहती है।

शुक्र - शोणित संयोग के समय दोष विशेष की उत्कटता का तात्पर्य दोष विशेष की वृद्धि अथवा प्रकोप से नहीं है, अपितु दोष विशेष की स्वाभाविक प्रबलता से हैं।

प्रकृति का भेद (Type of Prakrities) :

ये प्रकृतियाँ जिन एक अथवा अधिक प्रबल दोषों (वात, पित्त, कफ) से संयोग करती हैं, उन्ही दोषों से गर्भ भी अनुबद्ध हो जाता है, इस प्रकार गर्भ के प्रारम्भ में प्रबल दोष जिनसे गर्भ अनुबद्ध हो गया है, उस पुरुष की दोषज प्रकृति बनाते हैं अतएव कुछ व्यक्ति वाताधिक्य से वातजप्रकृति, पित्ताधिक्य से पित्तज प्रकृति और कफाधिक्य से श्लेष्मज प्रकृति, द्वन्दाधिक्य से द्वन्दज प्रकृति तथा दोषों की साम्यावस्था से समप्रकृति वाले होते हैं। इस प्रकार दोषज प्रकृतियाँ सात प्रकार की होती हैं।

"सप्त प्रकृतयो भवन्ति-दोषैः पृथग् द्विशैः समस्तैश्च ।। "- (सु० शा० 4/61)

"प्रकृतिमिह नराणां भौतिकी चेचिदाहुः पवनदहनतोयैः कीर्तितास्तास्तु तिस्रः।

स्थिर-विपुलशरीर: पार्थिवश्च क्षमावाञ्शुचिरथ चिरजीवी नाभसः खैर्महद्भिः ।। (सु०शा० 4/79)

1. वात प्रकृति पुरुष के लक्षण:

हस्वः शीघ्र : कृशश्चाणु प्रलापी परुषप्रियः।

स्तब्धाङ्गो विष्माश्लिष्टो गणरुपे गणे घृतिः?

(भेल संहिता वि० 4/16 पृ० 162)

मधुराम्लपटूष्णसात्म्यकाङ्क्षाः

कृशदीर्घाकृतयः सशब्दयाता।

न दृढ़ा न जितेन्द्रिया न चार्या

न च कान्तादपिता बहुप्रजा वा

(अ० हृ० शा० 3/87 पृ० 192)

अल्पकेशः कृशो रुक्षो वाचालश्चलमानसः।

आकाशचारी स्वप्नेषु वातप्रकृतिको नरः॥

(शा०पू० 6/20)

वात प्रकृति पुरुष अल्पकेशयुक्त, कृश तथा रुक्ष शरीर वाला, वाचाल, चपल तथा स्वप्न में आकाश में विचरण करने वाला होता है।

वातिकाश्चाजगोमायुशशाखूष्ट्रशुनां तथा।

गृधकाकखरादीनामनूकैः कीर्तिता नराः।

(सु०शा० 4/66)

वातादिपुरुष, बकरी, गीदड़, खरगोश, चूहा, ऊँठ, कुत्ता, गिद्ध, कौआ के स्वाभाव के समान चपल, अदृढ़, मत्सर और भीरु होता है।

श्वऋगालोष्ट्रगृधानुकाकाऽनुकाश्च वातिकाः॥

(अ० ह० शा० 3/89)

गीदड़, ऊँट, गिद्ध, चूहे तथा कोवे के स्वाभाव वाले व्यक्ति को वात प्रकृति का जानना चाहिए।

वात के गुण रुक्ष, शीत, लघु, सूक्ष्म, चल, विशद तथा खर है।

(रुक्षः शीतो, लघु सूक्ष्मश्चलोऽथ विशदः खरः- चरक)

तथा (रुक्षो लघु : शीतः खरः सूक्ष्मश्चलोऽनिलः - अ० ह्०)

वात प्रकृति मनुष्यों के शारीरिक तथा मानसिक लक्षण इन गुणों के अनुरुप होते हैं।

2. पित्त प्रकृति पुरुष के लक्षण :

अकाले पलितैर्व्याप्तो धीमान् स्वेदी च रोषणः ।

स्वप्नेषु ज्योतिषां दृष्टा पितप्रकृतिको नरः।।

(शा०पू० 6/21)

पित्त प्रकृति पुरुष के केश असमय से ही श्वेत हो जाते है, वह बुद्धिमान होता है, स्वेद तथा क्रोध बहुत आता है, स्वप्न में अग्नियां देखता है।

भुजंगोलूकगन्धर्वयक्षमार्जारवानरैः।

व्याघर्शनकुलानूकैः पैत्तिकास्तु नराःस्मृता।।

पित्त प्रकृति पुरुष सर्प, उल्लू, गन्धर्व, यक्ष, बिल्ली, बन्दर, व्याघ, रीक्ष और नेवले के स्वभाव के समान स्वभाव वाला होता है।

मध्यायुषो मध्यबलाः पण्डिताः क्लेशभीरवः।

व्याघ्रर्शकपिमार्जारयक्षानूकाश्च पैत्तिकाः।।

(अ० ह० शा०3/95)

पित्त प्रकृति पुरुष की आयु मध्यम, बल मध्यम होता है। वह विद्वान होता है। क्लेश को सहन नहीं कर सकता है तथा व्याघ, रीक्ष, बन्दर, बिल्ली और यक्ष के स्वभाव वाला होता है।

पित्त के गुण स्नेहयुक्त उष्ण, तीक्ष्ण, द्रव, अम्ल, सर तथा कटु हैं।

(सस्नेहयुष्णं तीक्ष्णं च द्रवमम्लं सरं कटुः - चरक)

(पित्तं सस्नेहतीक्ष्णोष्णं लघु विस्त्रं सरंद्रवम् - अ० ह०)

पित्त प्रकृति पुरुष में इन गुणों की प्रधानता होती है, अतः उनके शारीरिक तथा मानसिक लक्षण इन गुणों के अनुरुप होते हैं।

3. कफ प्रकृति पुरुष के लक्षण :

श्लेष्मणाजायतेस्निग्धः श्यामश्चलोमशस्तथा।

दीर्घाशिरोरुहः स्थूलोदीर्घप्रकृति संयुतः

(हारीत संहिता शा० 1/32 पृ० 505)

गम्भीर वुद्धिः स्थूलाङ्गः स्निग्ध केशो महाबलः ।

स्वप्ने जलाशयालोकी श्लेष्म प्रकृतिको नरः॥

(शा०पू० 7/22)

कफ प्रकृति पुरुष गम्भीर बुद्धि, स्थूल अंग, स्निग्धकेश, अति बलवान तथा स्वप्न में जलाशयों को देखने वाला होता है।

ब्रह्मरुदेन्द्रवरुणैः सिंहाश्वगजगोवृषैः।

ताक्ष्र्यहंससमानूका: श्लेष्मप्रकृतयो नराः ।।

(सुशा० 4/75)

कफ प्रकृति पुरुष ब्रह्मा, रुद्र, इन्द्र, वरुण, सिंह, घोड़ा, हाथी, गौ, सांड, गरुड़ और हंस के समान गम्भीर स्वभाव वाला होता है।

ब्रह्मरुद्रेन्द्रवरुणताताक्ष्र्यहंस गजाधिपैः।

श्लेष्मप्रकृतयस्तुल्यास्तथा सिंहाश्वगोवृषैः।।

(अ० ह्० शा०3/103)

कफ प्रकृति का मनुष्य ब्रह्मा, रुद्र, वरुण, हंस, हाथी, सिंह, घोड़ा, गौ और सांड़ स्वभाव का होता है।

श्लेष्मा के गुरु, शीत, मृदु, स्निग्ध, मधुर, स्थिर तथा पिच्छिल (गुरु, शीत, मृदु, स्निग्ध, मधुर, पिच्छिला : - चरक स्निग्धः शीतो गुरुर्मन्दः श्लेक्ष्णो मृत्स्न स्थिरः कफः- अ०ह्०)

गुण हैं। श्लेष्म पुरुष की प्रकृति इन गुणों के अनुरुप होती है।

व्यक्ति के मानस प्रकृति के आधार पर Psychology of Person का अध्ययन किया जाता है।

निष्कर्ष -

आयुर्वेदीय मतानुसार किसी भी व्यक्ति के स्वास्थ्य संरक्षण तथा रोगों के निर्मूलन हेतु, प्रकृति का सम्यक् ज्ञान तथा प्रकृति परीक्षण अति आवश्यक बताया गया है। प्रकृतियाँ दो प्रकार की होती है:

1. शारीरिक प्रकृति
2. मानसिक प्रकृति

प्रकृति एक व्यापक अर्थकारी शब्द है।

सन्दर्भ -

1. अष्टांग हृदय
2. चरकसंहिता
3. सुश्रुतसंहिता
4. भेलसंहिता
5. हारीतसंहिता
6. शब्दकल्पद्रुम
7. मेदिनी कोश
8. अष्टांग संग्रह